सामाजिक परिवर्तन तथा परिवार और विवाह के कार्यों एवं संरचना में परिवर्तन

*1. **प्रस्तावना**

समाज एक गतिशील व्यवस्था है। समय के साथ समाज की संरचना, संस्थाओं, मूल्यों, मान्यताओं, व्यवहारों और संबंधों में परिवर्तन होता रहता है। इसी प्रक्रिया को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। परिवार और विवाह समाज की दो महत्वपूर्ण संस्थाएँ हैं, इसलिए सामाजिक परिवर्तन का सीधा प्रभाव इनके कार्य, स्वरूप, संरचना, संबंधों और भूमिकाओं पर पड़ता है।

2. *सामाजिक परिवर्तन का अर्थ*

सामाजिक परिवर्तन से आशय समाज की सामाजिक संरचना, सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, मूल्यों, मानदंडों और व्यवहारों में समय के साथ होने वाले परिवर्तन से है।

सरल शब्दों में, जब समाज के रहने, सोचने, काम करने और आपसी संबंधों के तरीके में परिवर्तन आता है, तो उसे सामाजिक परिवर्तन कहते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

1. सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर प्रक्रिया है।
2. यह समाज की संरचना और संबंधों को प्रभावित करता है।
3. परिवर्तन की गति सभी समाजों में समान नहीं होती।
4. यह आर्थिक, राजनीतिक, तकनीकी, सांस्कृतिक और शैक्षिक कारणों से हो सकता है।
5. सामाजिक परिवर्तन सकारात्मक या नकारात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है।
6. इसका प्रभाव परिवार, विवाह, शिक्षा, धर्म, अर्थव्यवस्था आदि सभी संस्थाओं पर पड़ता है।

3. *सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारण*

(1) औद्योगीकरण

औद्योगीकरण के कारण रोजगार के लिए लोग गाँवों से शहरों की ओर जाने लगे। इससे संयुक्त परिवार की जगह छोटे या एकल परिवारों की प्रवृत्ति बढ़ी।

(2) नगरीकरण

शहरी जीवन में आवास की कमी, रोजगार की व्यस्तता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के कारण परिवार का आकार छोटा होने लगा।

(3) शिक्षा का प्रसार

शिक्षा ने लोगों में अधिकारों, समानता और स्वतंत्रता की भावना विकसित की। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा ने विवाह और परिवार की पारंपरिक भूमिकाओं में परिवर्तन किया।

(4) महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता

महिलाओं के रोजगार में बढ़ती भागीदारी से परिवार में केवल पुरुष को कमाने वाला सदस्य मानने की धारणा कमजोर हुई और पति-पत्नी की साझेदारी बढ़ी।

(5) विज्ञान और तकनीकी विकास

मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया और आधुनिक संचार साधनों ने लोगों के विचारों और जीवनशैली में परिवर्तन किया है।

(6) कानून और सरकारी नीतियाँ

विवाह, तलाक, उत्तराधिकार, बाल विवाह, घरेलू हिंसा आदि से संबंधित कानूनों ने पारिवारिक संबंधों को प्रभावित किया है।
(7) वैश्वीकरण
वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियों, जीवनशैलियों और विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा है।
4. परिवार की संरचना में परिवर्तन
परिवार समाज की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण संस्था है। सामाजिक परिवर्तन के कारण परिवार की संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।
पारंपरिक परिवार
पारंपरिक भारतीय समाज में संयुक्त परिवार अधिक प्रचलित था, जिसमें दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और बच्चे एक साथ रहते थे।
आधुनिक परिवार
आधुनिक समाज में एकल परिवार अधिक दिखाई देता है, जिसमें सामान्यतः माता-पिता और उनके बच्चे रहते हैं।
प्रमुख संरचनात्मक परिवर्तन
1. संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर
औद्योगीकरण, नगरीकरण और रोजगार के कारण संयुक्त परिवारों का विभाजन हुआ।
2. परिवार का आकार छोटा होना
परिवार नियोजन, शिक्षा और आर्थिक कारणों से छोटे परिवार की प्रवृत्ति बढ़ी।
3. परिवार में महिलाओं की स्थिति में बदलाव
महिलाएँ शिक्षा और रोजगार के माध्यम से आर्थिक रूप से अधिक स्वतंत्र हुई हैं।
4. अधिकारों का लोकतांत्रिकरण
पहले परिवार में निर्णय लेने का अधिकार मुख्यतः परिवार के पुरुष या बुजुर्गों के पास होता था। अब पति-पत्नी और बच्चों की राय को भी अधिक महत्व दिया जाता है।
5. पीढ़ियों के बीच संबंधों में बदलाव
बुजुर्गों और युवाओं की जीवनशैली एवं विचारों में अंतर बढ़ने से पारिवारिक संबंधों का स्वरूप बदल रहा है।
5. परिवार के कार्यों में परिवर्तन
परंपरागत परिवार अनेक कार्य स्वयं करता था, लेकिन सामाजिक संस्थाओं के विकास के साथ परिवार के कुछ कार्य दूसरी संस्थाओं को हस्तांतरित हो गए हैं।
(1) आर्थिक कार्य
पहले परिवार उत्पादन की प्रमुख इकाई था। परिवार के सदस्य खेती, पशुपालन और घरेलू उद्योग करते थे। आज उत्पादन और रोजगार का बड़ा हिस्सा बाजार एवं संगठित क्षेत्र में हो गया है।
(2) शैक्षिक कार्य
पहले बच्चों की प्राथमिक शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण परिवार में ही होता था। अब विद्यालय, कॉलेज और प्रशिक्षण संस्थाएँ प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
(3) धार्मिक कार्य
पहले परिवार धार्मिक संस्कारों और परंपराओं का प्रमुख केंद्र था। आधुनिकता के कारण धार्मिक कार्यों के स्वरूप में परिवर्तन आया है।

(4) मनोरंजन का कार्य
पहले परिवार सामूहिक मनोरंजन का प्रमुख माध्यम था। आज टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल, सिनेमा और खेल आदि मनोरंजन के महत्वपूर्ण साधन हैं।
(5) सामाजिककरण का कार्य
बच्चों के समाजीकरण में परिवार की भूमिका अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन विद्यालय, मित्र समूह, मीडिया और इंटरनेट भी सामाजिककरण को प्रभावित करते हैं।
(6) सुरक्षा एवं देखभाल
परिवार अभी भी बच्चों, बुजुर्गों और जरूरतमंद सदस्यों की देखभाल करता है, लेकिन अस्पताल, वृद्धाश्रम, बाल देखभाल संस्थाएँ और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ भी इसमें योगदान देती हैं।
6. विवाह की संरचना में परिवर्तन
विवाह परिवार निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है। सामाजिक परिवर्तन ने विवाह के स्वरूप में भी अनेक बदलाव किए हैं।
प्रमुख परिवर्तन
1. विवाह की आयु में वृद्धि
शिक्षा और जागरूकता के कारण कम उम्र में विवाह की प्रवृत्ति में कमी आई है।
2. जीवनसाथी के चुनाव में परिवर्तन
पहले विवाह का निर्णय मुख्यतः माता-पिता और परिवार के बुजुर्ग करते थे। आज युवाओं की पसंद और सहमति को अधिक महत्व दिया जाता है।
3. प्रेम विवाह की स्वीकृति में वृद्धि
शिक्षा, नगरीकरण और सामाजिक संपर्क के विस्तार के कारण प्रेम विवाह के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आया है।
4. अंतर्जातीय विवाह
शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के कारण कुछ लोगों में जाति से बाहर विवाह की स्वीकार्यता बढ़ी है।
5. दहेज संबंधी दृष्टिकोण में परिवर्तन
कानूनी प्रावधानों और सामाजिक जागरूकता के कारण दहेज प्रथा के विरुद्ध चेतना बढ़ी है, हालांकि यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।
6. विवाह में समानता की भावना
आधुनिक विवाह में पति-पत्नी के बीच सहयोग, संवाद और समानता को अधिक महत्व दिया जा रहा है।
7. विवाह के कार्यों में परिवर्तन
पारंपरिक रूप में विवाह के कार्य
परिवार निर्माण
संतानोत्पत्ति एवं पालन-पोषण
यौन व्यवहार का सामाजिक नियमन
आर्थिक सहयोग
सामाजिक स्थिति प्रदान करना
सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण

आधुनिक समाज में परिवर्तन
1. साथी और भावनात्मक सहयोग को अधिक महत्व।
2. पति-पत्नी के बीच समानता और साझेदारी बढ़ना।
3. संतानोत्पत्ति को विवाह का एकमात्र उद्देश्य न मानना।
4. परिवार नियोजन के कारण छोटे परिवार की प्रवृत्ति।
5. विवाह में व्यक्तिगत पसंद और भावनात्मक संतुष्टि का महत्व बढ़ना।
6. विवाह संबंधों में समस्या होने पर कानूनी विकल्पों और परामर्श सेवाओं की उपलब्धता बढ़ना।
8. सामाजिक परिवर्तन का परिवार और विवाह पर सकारात्मक प्रभाव
महिलाओं की स्थिति में सुधार।
बच्चों की शिक्षा में वृद्धि।
पति-पत्नी के संबंधों में समानता।
परिवार नियोजन और छोटे परिवार को प्रोत्साहन।
व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि।
बाल विवाह और दहेज जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध जागरूकता।
परिवार में लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास।
9. नकारात्मक प्रभाव
पारिवारिक विघटन और संबंधों में दूरी।
बुजुर्गों की देखभाल की समस्या।
पीढ़ियों के बीच संघर्ष।
काम और पारिवारिक जीवन में असंतुलन।
वैवाहिक तनाव और अस्थिरता।
बच्चों को पर्याप्त पारिवारिक समय न मिल पाना।
व्यक्तिगतता और उपभोक्तावाद का बढ़ना।
10. निष्कर्ष
अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन ने परिवार और विवाह दोनों के स्वरूप, संरचना, कार्यों और संबंधों को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार से एकल परिवार, पारंपरिक विवाह से अधिक सहमति एवं समानता आधारित विवाह तथा पारंपरिक भूमिकाओं से साझेदारी आधारित भूमिकाओं की ओर परिवर्तन दिखाई देता है। हालांकि आधुनिक परिवर्तन ने अनेक सकारात्मक अवसर दिए हैं, लेकिन इसके साथ पारिवारिक विघटन, बुजुर्गों की देखभाल और पीढ़ीगत संघर्ष जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इसलिए आवश्यकता है कि आधुनिकता के सकारात्मक पक्षों को अपनाते हुए परिवार के सहयोग, प्रेम, सम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को बनाए रखा जाए।